विषय : यात्रा ज़ारी....

मार्गदर्शी ने कहा अलविधा

"अब मैं क्या करूँ"...... मेरी मार्गदर्शी ने कहा अलविधा" - पतझड़ के समय था। रास्ता, गुलमोहर के सूखे फूलों और पत्ते से एक कालीन जैसे बिछी हुई है। खामोशी के आवाज़ अनु के यादों की किताब को खुला। इसके हर एक पल को वह पलट दिया। यादें ऐसा होती है, कभी-कभी वे हमें खुश देते हैं और कभी कभी वे दुःख देते हैं। पर उसको समझ नहीं आयी कि यह खुशी की अनुभूती या दुःख की। ठंडक हवाँए, ताज़गी से भरी मिट्टी, नीली आकाश आदी उसकी यादों की साक्षी बन गए।

गरीबी की स्वाद समझनेवाली एक लड़की थी अनु। सपना रूपी पतंग के पीछे

दौड़ने केलिए वह तैयार थी। पढ़ना और लिखना उसकेलिए अपनी जीवन थी। वह पढ़ना चाहती थी। पर उसकी वातावरण उसकेलिए विपरीत बन गई। जीवन रूपी सफर, एक पल में चुप होगई। अपने पिताजी का मृत्यु।

अब केलिए अपनी परिवार था सब कुछ। अपने माँ-बाँप को एक सुखद जीवन देने केलिए वह पढ़ती है। पर अपने बाँप की मृत्यु उसको टूट दिया। अपनी माँ केलिए और बहन केलिए एक शादी करने केलिए वह निरबंदित हो गई। बीस साल की वह लड़की के जीवन में अब क्या होगा? उसकेलिए अपनी जीवन एक सवाल बन गई।

गरीबी को स्वाद समझनेवाली वह लड़की को अनपढ़ होने के स्वाद समझनेवाला एक लड़का को मिला। वह था राहुल, अपने होने वाला पति।

* * * * *

"अगले हफ्ते में शादी पक्का है। लड़का और लड़की अब कुछ बात करो। एक दूसरे को आप लोग समझना ही है।"
- गाँव के नेता के वचन सुनकर दोनों एक दूसरे से बात किया।
"कुछ कहो ना।" - राहुल ने शुरु किया।
"आप मेरे होनेवाले पति है। मेरी जीवन अब आपके साथ है। मेरे पिताजी की मृत्यु मेरेलिए मेरी जीवन अंत होने का एहसास दिया। मुझे काम करना ही है। पैसा कमाना ही है और अपनी परिवार को पालन करना ही है। पर शादी के बाद मुझे कुछ नहीं कर सकती है। जब हमारे जीवन निश्चल होगा, तब हमारे जीवन में एक मार्ग आएगा। पर मैं निरभाग्य हूँ। बस इतना ही है"
- कमल रूपी आँखों में पानी भर कर अंजु वहाँ से पीछे मुड़कर चली।

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 332

"एक पल रुको।" - राहुल ने अनु को बुलाया। उसने देखी।

"मुझे आप जैसे बात करना नहीं आता है। क्योंकि मैं एक किसान का बेटा हूँ और अनपढ़ भी हूँ। और अब मैं भी एक किसान हूँ। मुझे एक परिवार को पालन ~~करना~~ कर सकता है। मैं आपसे एक बात वादा करना चाहता हूँ कि आपको आगे पढ़ सकता है। उसकेलिए मैं सब कुछ करने केलिए तैयार हूँ। आपको अपनी मनपसंद काम कर सकते हैं। आपको पैसा मैं नहीं चाहता हूँ। और आपके जीवन ~~आज~~ अपनी शादी के बाद, एक नया शुरु ~~होता~~ होता है। आप फिकर मत कीजिए। मेरा दम ~~छूट~~ छोड़ने तक मैं आपकी साथ होंगे।" - यह कह कर राहुल ने वहाँ से निकला।

अनु के मन में नई उम्मीद के फूलों खुला। अपनी जीवन की मार्गदर्शी को

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 332

अनु देखा।

शादी हुई। अनु एक नई जीवन शुरु किया। अपनी पढ़ाई फिर शुरु किया। ~~वह~~ उसने अच्छी से पढ़ा। अपनी पति कोलर राहुल सब कुछ किया। तीन साल गई। एक सरकार आस्पताल में अनु को एक एल.डी क्लर्क की काम मिली। अपने आशायों को वह प्राप्त किया। अनु से ज़्यादा राहुल खुश होगई।

अनु ने अपनी बहन की शादी करवाई। अपनी माँ को सुखद जीवन दी। पूरी तरह उसकी जीवन सफल हुई। पर जीवन ~~कभी नहीं~~ हमेशा एक जैसा नहीं होगा।

अनु को अपनी जीवन के नई वातावरन को सामना करना पड़ा। अपना पति राहुल ने अनु को ~~नई रास्ता~~ असली रास्ता दिखाने के बाद उसको छोड़कर गया।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

वह अनु के बाँप के पास चला। अपनी जीवन को सब कुछ देने के बाद वे ~~मर~~ गए। उसने ~~कह~~ उसको पूरी तरह टूटा। अचानक उसने ~~ए एक~~ अकेली हो गई। जहाँ राहुल और अनु अपनी जीवन शुरु ~~पहली बात~~ किया है, वहाँ वह जाकर बैठा। वह गुलमोहर के पेड सबको साक्षी थी। वसंत के समय वे दोनों एक साथ बैठकर बात किया था। अब वह पतझड़ के समय पर अनु के साथ राहुल नहीं है। "अब मैं क्या करूँ... मेरी मार्गदर्शी ने कहा अलविदा"

- अपनी यादों को एक बार भी ~~देखने के~~ पढ़ने के बाद वे अपने यादों की किताब को बंद किया।

अनु को समझ आयी। जीवन एक यात्रा है। वह यात्रा ~~मैं सबकुछ~~ मैं हम सबकुछ को सामना करते हैं।

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 332

बहुत सारे लोग हमारे जीवन में आएंगे और जाएंगे। फिर भी हम अपनी जीवन की यात्रा करते हैं। हर एक व्यक्ति के जीवन में एक मार्गदर्शी आएगा। वह हमें सही रास्ता दिखाता है। यह मार्गदर्शी हमेशा हमारे साथ न होगा। सही रास्ता दिखाने के बाद वह हमें छोड़कर जाएगा। फिर भी हम यात्रा करना ही है।

यहाँ अनु के जीवन में राहुल था उसकी मार्गदर्शी। उसने उसको सही रास्ता दिखाया यानी अपनी जीवन के लक्ष्य को दिखाया और उन्होंने अलविदा कहा। अब अनु को अपनी जीवन बाकी है यानी यात्रा बाकी है। वह जीना ही है यानी सफर करना ही है। अनु के जीवन का यात्रा जारी.....

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)